नारी को मिले निर्णायक भूमिका

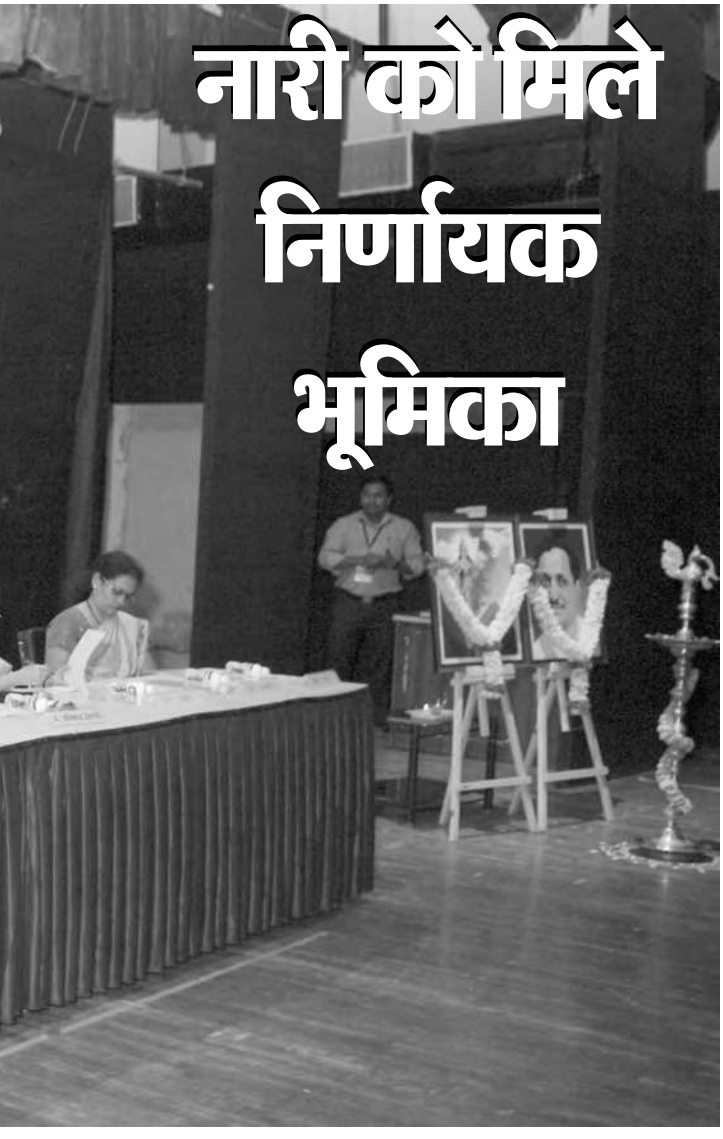

मानसिकता को चुनौती बताते हुए इसमें बदलाव लाने की आवश्कता बताई। भारतीय नारी शक्ति की संस्थापिका निर्मला आप्टेजी ने कहा कि महिला अधिकार पर विश्व स्तर पर आंदोलन हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत में नारी के प्रति सोच बदली है, लेकिन इसमें अभी व्यापकता की कमी है। जिस कारण नारी को न्याय नहीं मिल रहा है। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि नारी को निर्णय प्रक्रिया के केन्द्र में लाने का मतलब पुरूष के अधिकार में कटौती नहीं है। हमें इस सोच में परिवर्तन लाना होगा, तभी हम नारी को समानता में ला सकते हैं। उनका कहना है कि दोनों को सामान अवसर मिले इस दृष्टि से इसे देखने की आवश्यकता है। आज की शिक्षा व्यवस्था में भी महिलाओं को कमजोर दिखाने की कोशिश की जाती है। इसमें सुधार की जरूरत है। महिला को वस्तु के रूप में देखने का दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। हमें नारी को समानता के रूप में देखने की आवश्यकता है। वास्तव में यह सुधार इसलिए नहीं हो पा रहा ज़्योंकि हम चीज को पुरूष मानसिकता से देखा जाता है। मध्यप्रदेश की महिला और बाल विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटणीस ने कहा कि हमारी संस्कृति में नारी-पुरुष को अलग-अलग मानने की परंपरा नहीं है। हमारी विकास की संकल्पना उपभोग पर नहीं बल्कि उपयोग पर है। असली नेतृत्व तो श्रेय देने में है और महिला ये काम हर जगह करती है। महिला समन्वय की राष्ट्रीय संयोजिका गीता गुंडे ने कहा की नारी-पुरुष समानता के लिए केवल पुरुषों की मानसिकता बदलने से कुछ नहीं होगा। महिलाओं का स्थान ज़्या हो ? यह तय करने के लिए महिलाओं की मानसिकता में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। नारी को पुरुषों जैसा बंधनमुक्त जीवन मिले यह पश्चिमी सज़्यता यहां उचित नहीं है। केवल नारी-पुरुष समानता से महिला को निर्णय प्रक्रिया में स्थान नहीं मिलेगा। उसके लिए दीनदयालजी के एकात्म भाव की आवश्यकता है। समाज के विभिन्न क्षेत्र में आज महिलाओं की कितनी सहभागिता है इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है और इसमें वृद्धि होने के लिए नियोजन पूर्ण प्रयास करने की जरूरत है। संगोष्ठी में आठ राज्यों के 52 संगठनों की 145 प्रतिभागी महिलाओं ने हिस्सा लिया। जिसमें भाजपा महिला मोर्च की राष्ट्रीय अध्यक्ष विजया रहाटकर, महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष पूर्णिमा आडवाणी, रागिणी चंद्रात्रे, जाई वैद्य , मोनिका अरोरा, डा. वसुधा कामत, ज्योति चौथाईवाले, डा. दिव्या गुप्ता, रश्मि शुज़्ला, निरुपमा देशपांडे, डा.नाहिद शेख, शताज़्दी पाण्डे, डा.नीलम गोर्हे प्रमुख रहीं।